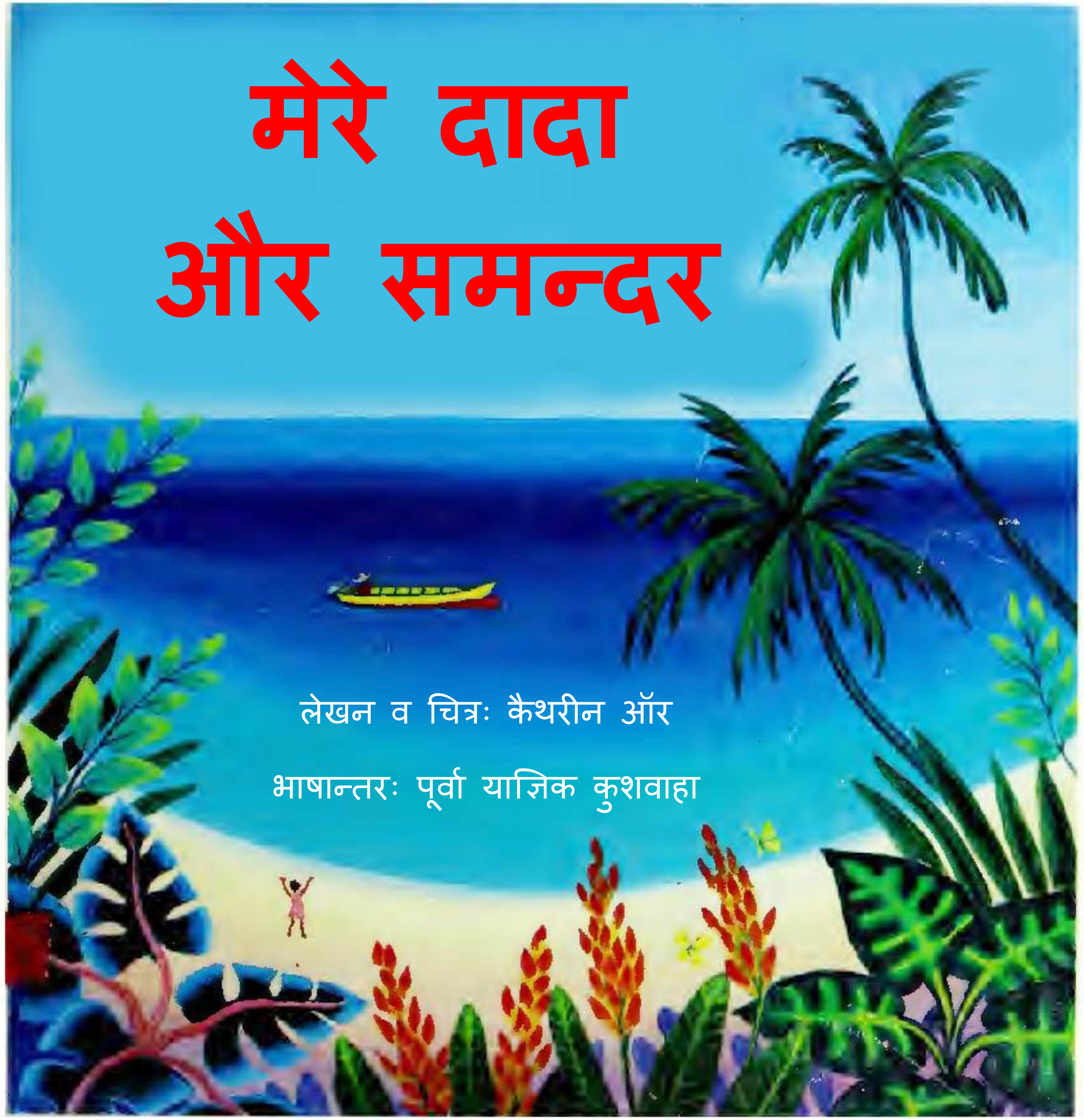
मेरे दादा और समन्दर



लेखन व चित्रः कैथरीन ऑर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरे दादा और समन्दर

लेखन व चित्रः कैथरीन ऑर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



क्रिस

कार्ल

क्रिस्टीना

और सेंट लूसिया के हमारे सभी दोस्तों को,

काफ़ को विशेष आभार के साथ





मेरे दादा सेंट लूसिया के टापू में एक मछलीमार थे। वे कभी स्कूल नहीं गए, पर बेहद ज़हीन थे। वे समन्दर और आकाश को ठीक उस तरह पढ़ सकते थे, जैसे ज़्यादतर लोग क़िताबें पढ़ते हैं। उन्होंने मुझे बरसाती बादलों को तलाशना सिखाया था, और यह भी कि समुद्री पाखी कैसे हमें मछलियों का सुराग बता सकते हैं। पर सबसे बड़ी बात जो उन्होंने सिखाई थी वह दिल के बारे में, वह मैं कभी नहीं भूलूंगी।

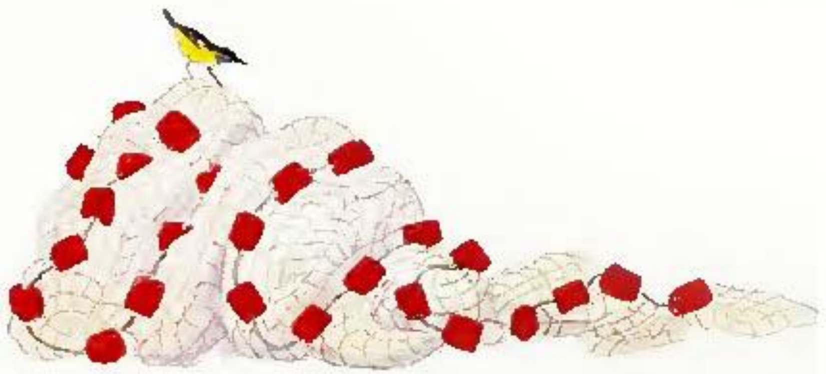


जब मौसम अच्छा होता दादा सप्ताह में छह दिन मछली पकड़ने जाते। सर्दियों में वे डॉल्फिन और किंगफिश पकड़ते, जो खासी मोटी, चिकनी और लगभग मेरे जितनी बड़ी होतीं थीं। गर्मियों में वे अपने जाल से उड़न मछली पकड़ते थे जो बड़े व्याध पतंगों के झुण्ड की तरह पानी की सतह को छूते हुए बढ़ती थीं। इतवार के दिन जब दादी और मैं गिरजे में होते, दादा अपनी डोंगी *फैन्सी लेडी* का रख-रखाव करते।





दादा को *फैंसी लेडी* पर फक्र था। वह उन्हें बेइन्तहा खुशी देती थी। उसे एक विशाल पेड़ से तराश कर बनाया गया था, जो पहाड़ों पर उगते हैं। इन्जनों वाली नावों के युग के पहले सेंट लूसिया के मछलीमार जैसी डोगियों का इस्तेमाल करते थे, दादा की डोंगी भी ठीक वैसी। वे उसके चूने-टपकने वाले तख़्तों को भरते, और हर शाम उसे उलट कर रखते ताकि उसकी लकड़ी सड़ न जाए। साल में एक बार वे उस पर चमकीले रंग तब तक पोतते जब तक वह धूप में दमकने न लगती।





दादी हमारे साथ गिरजे न चलने के लिए दादा को डपटतीं। "ख़ुदा का कहर तुम पर बरपेगा, क्योंकि तुम उसके घर जाते ही नहीं" वे कहतीं।

पर दादा एक न सुनते। वे कहते, "ख़ुदा तो समन्दर में, आसमान में, मछलियों में और हम सबमें बसा हुआ है। उसका सरोकार इस बात से है कि हम अपने दिलों को देखते और उसकी सुनते हैं या नहीं। मुझे उससे मुलाकात करने किसी छोटे से घर में जाने की भला क्या ज़रूरत है?"







"शायद आपको गिरजा घर चलना चाहिए, मतलब एतिहायत के तौर पर ...," मैंने कहना शुरु किया। पर दादा बखूबी समझते थे कि ख़ुदा की मंशा क्या है।

एक सुबह वे मुझे अपने साथ *फैन्सी लेडी* में बिठा कर ले गए। हमने सेंट लूसिया को पीछे छोड़ा और हमारा टापू काले पहाड़ों और बैंगनी रंग के समन्दर और आसमान का एक चित्र-सा लगने लगा। लम्बी लहरों ने हमें प्यार से उठाया और हवा ने तो मानो अपनी साँसें ही रोक लीं। तब अचानक हवा के एक झोंके के साथ सूरज की रोशनी पहाड़ों पर पिघले सोने की नदी-सी बह आई।

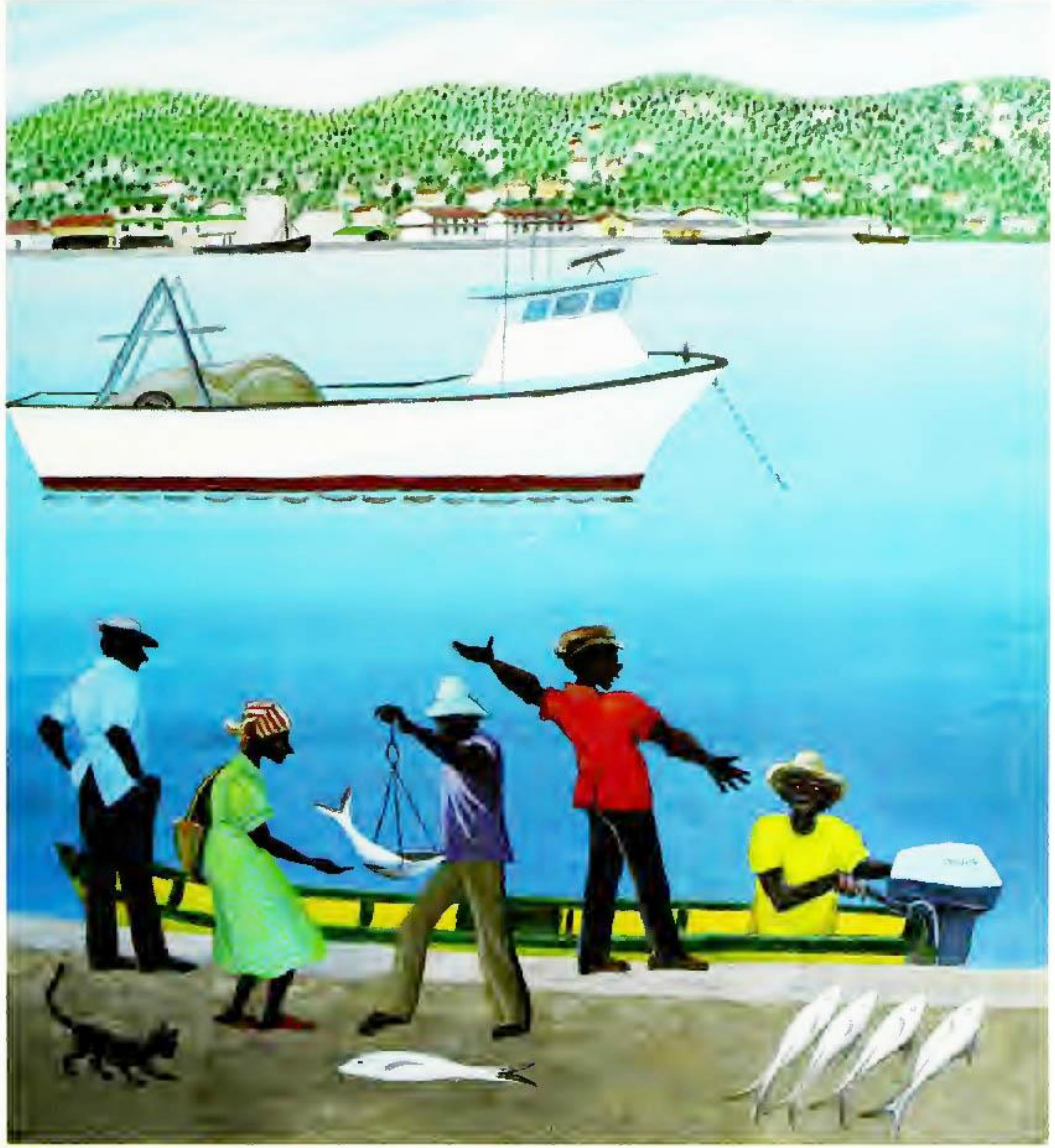
"यही खुदा का घर है," दादा ने आहिस्ता से कहा।



अगले बसन्त दादा का भांजा सेंट थॉमस से दादा से मिलने अपनी नई, बड़ी-सी मछली पकड़ने की नाव ले कर आया। उसने शान बघारते कहा कि मछली पकडने की उस नाव की बंसियों और जालों से वह ढ़ेरो मछलियाँ पकड़ सकेगा।

"इस नाव और इसके दमदार इंजन, और इसमें जो बर्फ़ से भरी जगह है, उससे मछलियाँ हफ्तों तक बिना सड़े रह सकेंगी," उसने दादा को बताया। "समय बदल रहा है बूढ़े बाबा, यह भविष्य का तरीका है। अपनी पेड़ से बनी पुरानी डोंगी से तुम इन नावों से टक्कर नहीं ले सकोगे। तुम मेरे साझेदार बन जाओ। हम खूब मछलियाँ पकडेंगे और साथ-साथ मालामाल हो जाएंगे।"





उस रात खाने के वक़्त दादा ने अपना खाना बड़े धीरे-धीरे खाया। वे अपने तले हुए केले खाना तक भूल गए।

"क्या आप फ्रैंकलिन के साझेदार बनेंगे?" मैंने पूछा।

"सालों पहले जब समन्दर में भरपूर मछलियाँ थीं," दादा ने कहना शुरु किया। "फ्रैंकलिन जैसी बड़ी नावें नहीं थीं। पर अब हर साल मैं और-और बड़ी नावें देखता हूँ। और हर साल मछलियाँ कम होती जाती हैं। ना, मैं फ्रैंकलिन से साझेदारी नहीं करूंगा। उसके जैसे मछुआरे अंधे हैं। वे ख़ुदा की मेज़ पर खाने की थाली के बदले ठेलागाड़ी ले कर आते हैं। ख़ुदा जितना दे सकता है उससे ज़्यादा लेकर आप तरक्की नहीं कर सकते।"







“अपनी थाली साफ़ करना,” दादी ने समुद्री-सेवार के मीठे का कटोरा रखते दादा को डपटा। समुद्री-सेवार जो सुनने में लगता है ठीक वही होता भी है - यह एक काईनुमा खरपतवार है जो समुद्र में उगती है। हम भाटे के समय चट्टानों के बीच से इस फिसलनी खरपतवार को मुट्ठियों में भर इकट्ठा करते हैं। या फिर जब बाज़ार में मिले तो वहाँ से, सुखा कर बेची जाने वाली सेवार ख़रीद लाते हैं। पर ऐसा बहुत नहीं होता क्योंकि सेंट लूसिया में समुद्री-सेवार का मीठा सब खूब पसन्द करते हैं।

“लगता है लोग समुद्री-सेवार को भी थाली के बदले ठेलागाड़ी में ले जाते होंगे,” मैंने दाद से कहा। क्योंकि समुद्री-सेवार भी कम हो चल थी।





जिस साल दादा ने समुद्र में जाना बन्द किया उस साल मैं नौ साल की हुई थी। हर साल मछली पकड़ने का धंधा बद-से-बदतर होता गया था। दादा उतनी मछली पकड़ ही नहीं पाते थे कि घर खर्च चल सके। सो दादी ने एक बेकरी शुरु की। दादा ने दूसरे काम तलाशे। उन्होंने टैक्सी चलाने की कोशिश की, पर कहा कि उस काम में गरमी बहुत लगती है और धूल-धक्कड़ अलग परेशान करता है। उन्होंने दुकान संभालने की कोशिश की, पर तब कहा कि दुकान बहुत छोटी है और तंग जगहों में उनका जी घुटता है।

''तेरे दादा अपनी हिम्मत खो बैठे हैं,'' दादी ने कहा। तब ठंडी साँस छोड़ उनके लिए समुद्री-सेवार का काढ़ा बनाया। वे रोज़ दादा को यह काढ़ा देतीं, ताकि उनकी सेहत बने, क्योंकि दादा की भूख ही मर गई थी।



“मैंने हिम्मत नहीं खोई है,” दादा ने अपना काढ़े की चुस्की लेते कहा। “पर मेरा दिल समन्दर में ही अटका है। वहाँ मैं हर दिन के डूबने और उगने के साथ दुनिया में अपनी जगह महसूस कर सकता हूँ। पर यहाँ मैं खुद को उतना ही फंसा महसूस करता हूँ, जितना बेचारी *फैंसी लेडी* भाटे के समय समन्दर किनारे पड़े-पड़े महसूस करती होगी। मैं करुं तो क्या? लायला कहीं तो जवाब होगा।”

वे चुप हो अपने काढ़े के घूरने लगे। कुछ ही देर में, मेरे देखते-देखते उनकी आँखें फैलीं और गोल हो गईं। “समुद्री-सेवार लायला! यही तो ठीक मेरी नाक के नीचे हमेशा से था। ये आँखें अंधी हैं, पर मेरा दिल देख सकता है।” वे कूद कर उठे और अपना काढ़ा वहीं छोड़ हड़बड़ाते हुए सड़क पर चल दिए। और मुझे इस उलझन में डाल गए कि उनका मतलब क्या है।

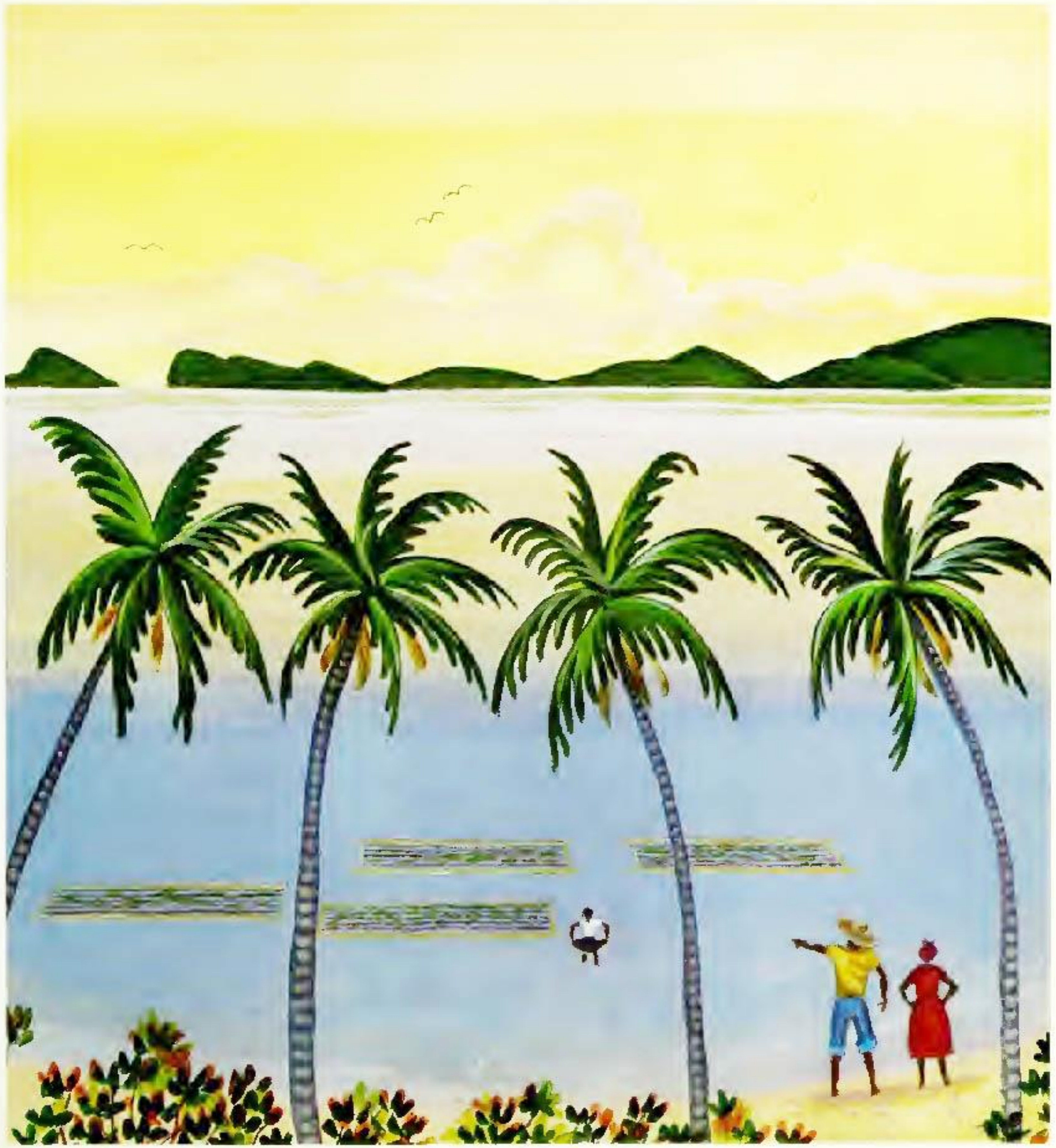




वे सप्ताह भर अपनी बात को राज़ बनाए रहे। पर तब आख़िरकार वे हमें खाड़ी पर ले गए, वहाँ, जहाँ हम समुद्री-सेवार इकट्ठा किया करते थे। "वहाँ दूर देखो लायला, और बताओ क्या देख रही हो। "तैरती डोगियाँ?" मैंने पानी में कुछ आगे बढ़, पास से देख कर कहा। पर वे बाँस से बनी चौखटें थी, जिनमें बीच में रस्सियाँ बंधी हुई थीं। हरेक रस्सी में बीच-बीच में समुद्री-सेवार के कुछ पत्ते बंधे हुए थे।

"अगर हम जो कुछ लेते हैं, उसका कुछ हिस्सा लौटा दें, तो हमेशा बहुतायत पाएंगे," दादा ने अपनी ज़हीन, नाचती हुई आँखों से कहा। "जो तुम देख रही हो लायला वह अदला-बदली है। मैं समुद्री-सेवार की खेती कर रहा हूँ।"





वह शुरुआत थी। साल ख़त्म होने तक दादा ने जान लिया था कि उनके चौखटों को रखने की सबसे अच्छी जगहें कौन-कौन सी थीं। उन्होंने वे जगहें चुनीं जहाँ लहरें और पानी की गहराई बिलकुल सही हो, और जहाँ तूफ़ान उन्हें तहस-नहस न कर दें। उन्होंने यह भी समझ लिया था कि वे सेवार की फसल कितनी बार उतार सकते थे। वे उसके पत्तों को सावधानी से काटते-छांटते और हमेशा अगली फसल के बढ़ने के लिए काफ़ी सेवार छोड़ देते। वे काटी हुई सेवार को ताज़े पानी में धोते और तब धूप में सूखने के लिए फैला देते। सूखने पर उन्हें बेचने के लिए बन्डल बनाते। उनका नया धंधा पनपा और दादा भी, क्योंकि वे वापस समन्दर में काम कर रहे थे, जो उनका असली ठीया था।





जब मेरे स्कूल जाने का समय आया, वे मुझे अलग ले गए। ''लायला,'' वे बोले, ''अच्छी शिक्षा तुम्हें जीवन में जो तुम चाहो उसे चुनने की आज़ादी देगी। पर हमेशा याद रखनाः दिमाग दरअसल दिल का कहा करने के लिए बना है, दिमाग का कहा करने के लिए दिल नहीं।''



मैं ज़िन्दगी में जहाँ भी जाऊं, हमेशा सेंट लूसिया, यानी अपने घर लौटूंगी। और तब मैं हमेशा अपने दादा को दूखूंगी। हालांकि अब वे सिर्फ एक याद हैं। वे अपनी *फैंसी लेडी* के साथ ख़ुदा के घर में रहेंगे, समन्दर और आसमान से लिपटे, अपनी समुद्री-सेवार की देखभाल करते, सूरज को उगते देखते। और उनके नीचे लहरें हौले-हौले उठती-गिरती रहेंगी।





